संस्कृति (Culture)

मानवशास्त्रियों के अनुसार संस्कृति वह जटिल समग्रता है। जिसमें समाज के एक सदस्य के नाते मनुष्य द्वारा अर्जित ज्ञान, विश्वास, कला, नैतिकता, विधि-विधान रीति-रिवाज के अलावा उसकी अन्य क्षमताएँ एवं आदतें शामिल हैं। कतिपय विद्वानों के अनुसार मानव निर्मित समस्त चीजें संस्कृति कहलाती हैं। दूसरी तरफ, समाजशास्त्रियों का कहना है कि संस्कृति एक ऐसा तथ्य है, जिसे सीखा जाता है, यह कोई सहजता या स्वस्फूर्त व्यवहार (Instinctive behaviour) नहीं है। सीखकर ही इसे समाज में एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी तक पहुँचाया जाता है। इस अर्थ में कोई भौतिक वस्तु को संस्कृति नहीं माना जाता है। अर्थात संस्कृति सीखे हुए गुणों के योग है। मानवशास्त्रीय तथा समाजशास्त्रीय परिभाषाओं की सहायता से संस्कृति की अवधारणा को

सरलतापूर्वक समझा जा सकता है।

मानवशास्त्रीय परिभाषाएँ

ई. बी. टायलर (E. B. Tylor) के अनुसार, "संस्कृति वह जटिल सम्पूर्णता है जिसमें विज्ञान, विश्वास, कला, आचार, कानून प्रथा तथा इसी प्रकार की ऐसी सभी क्षमताओं और आदतों का समावेश रहता है जिन्हें मनुष्य समाज का सदस्य होने के नाते प्राप्त करता है।"

मैलिनोस्की (Malinowski) ने संस्कृति में केवल उन्हीं ढंगों का उल्लेख किया है जिनके द्वारा व्यक्ति की आवश्यकताओं अथवा उद्देश्यपूर्ण क्रियाओं की पूर्ति होती है।

समाजशास्त्रीय परिभाषाएँ

पारसन्स (T. Parsons) के अनुसार, "संस्कृति वह पर्यावरण है जो मानव क्रियाओं का निर्माण करने में आधारभूत है।"

मैकाइवर और पेज (MacIver and Page) के अनुसार, ~~"संस्कृति~~ "हमारे रहने, विचार करने, प्रतिदिन के कार्यों, कला, साहित्य, धर्म, मनोरंजन और आनन्द में, संस्कृति हमारी प्रकृति की अभिव्यक्ति है।

लुण्डबर्ग के अनुसार, "संस्कृति को उस व्यवस्था के रूप में परिभाषित किया जा सकता है जिसमें हम सामाजिक रूप से प्राप्त और अगली पीढ़ियों को संचारित कर दिये जाने वाले निर्णयों, विश्वासों, आचरणों तथा व्यवहार के

CLASSMATE

परम्परागत प्रतिमानों से उत्पन्न होने वाले प्रतीकात्मक और भौतिक तत्वों को सम्मिलित करते हैं।

उपर्युक्त सभी परिभाषाओं से हम यह निष्कर्ष दे सकते हैं, "संस्कृति भौतिक और अभौतिक तत्वों की वह जटिल सम्पूर्णता है जिसे व्यक्ति समाज का सदस्य होने के नाते प्राप्त करता है तथा जिसमें वह अपना सम्पूर्ण जीवन व्यतित करता है।"